भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 3 | **अप्रैल** 2002 | **अंक** 4

पुस्तक वर्ष के दौरान आइये, हम अँधेरे के राक्षस से लड़ने का संकल्प करें। आइये, हम प्रत्येक घर में ज्ञान का प्रकाश फैलाएँ और सभी धर्मों की समानता के बारे में जागरूकता उत्पन्न करें।

— **अटलबिहारी वाजपेयी**

प्रधानमंत्री, भारत सरकार

★★

पुस्तक वर्ष के दौरान में सभी देशवासियों से अनुरोध करता हूँ कि वे पुस्तकें खरीदें, पढ़ें और दूसरों को विभिन्न अवसरों पर उपहार में दें।

— **मुरलीमनोहर जोशी**

मानव संसाधन विकास मंत्री

★★

यह संदेश क्या पुस्तक वर्ष मात्र के लिए है ?

— **सम्पादक**

★★

इंगलैण्ड की औद्योगिक क्रान्ति हो या पोलैंड के परिवर्तन या कि रामचरितमानस की गूँज। इस सबके लिए पुस्तक की उपलब्धता, सुलभता और कम दाम अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यदि सरकार चाहती है कि लोग पढ़ें तो सिर्फ पुस्तक वर्ष की नारेबाजी की फुग्गेबाजी से कुछ नहीं होगा। उसे तत्काल प्रभाव से प्रकाशन उद्योग को संकटग्रस्त करने के इस कदम को वापस लेना चाहिए, वर्ना हम सब पुस्तकों को पाठकों से दूर होते देखेंगे। फिर न विचार का सवाल रह जाएगा या सद्विचार का। देरिदा के 'विखंडनवाद' की तरह क्या सरकार भी हर उद्योग को खंडित होते देखना चाहती है या यह मानती है कि यही इसकी नियति है।

— **नरेन्द्रकुमार**

पुस्तकों पर बढ़ती हुई डाक दर

अभी पुस्तक वर्ष 2001-2002 समाप्त हुआ नहीं कि प्रस्तावित नये बजट में पुस्तकों और पाठकों पर गहरा प्रहार करने की योजना बना ली गई।

सुदूर स्थित गाँवों तथा नगरों में पुस्तकें डाक द्वारा ही पाठकों तक पहुँचती हैं। पुस्तकों पर डाक व्यय जितना कम होगा, पाठक मनपसन्द पुस्तक मँगा सकेगा। डाकव्यय पुस्तक मूल्य से भी अधिक हो जाने से पाठक पुस्तक मँगाने का साहस नहीं कर सकेगा।

प्रत्येक पुस्तक एक इकाई होती है। साबुन, तेल, टूथपेस्ट की तरह ब्राण्ड नहीं होतीं जो उस नाम से जानी जा सकें और प्रत्येक गाँव, कस्बे और नगर में सुगमता से सुलभ हों। विभिन्न विषयों की पुस्तकों की जानकारी पाठकों को प्रकाशकों द्वारा प्रचार पत्रों, सूची पत्रों से कराई जाती हैं। यदि इन प्रचार साधनों को पाठकों तक पहुँचाने में खर्चीला बना दिया गया तो पाठक तक उन पुस्तकों की जानकारी नहीं पहुँच सकेगी और प्रकाशक को भी अपने प्रकाशन कार्यक्रम में परिवर्तन करना होगा और उसे सामान्य पाठ्य पुस्तकों तक अपने को सीमित रखना होगा। इससे नवीनतम विविध विषयी ज्ञान की पुस्तकों का प्रकाशन नहीं हो सकेगा, क्योंकि ऐसी पुस्तकों की जानकारी तथा डाक द्वारा पाठकों तक पुस्तकें पहुँचाने का साधन अवरुद्ध हो जायगा।

पुस्तकें अन्य उपभोक्ता सामग्रियों की तरह नहीं हैं जो विक्रेता एक साथ अधिक संख्या में मँगा सके। किसी नगर में किसी पुस्तक के दो-तीन पाठक ही होंगे जिन्हें विक्रेता डाक से मँगाकर पाठक को सुलभ कराता है, या पाठक स्वयं वी०पी० द्वारा मँगाता है।

पुस्तकें, ज्ञान, मनोरंजन, शिक्षा, व्यक्तित्व-विकास तथा देश-निर्माण की साधन हैं। इनकी जानकारी पाठकों को मिलनी चाहिए और सुगमता एवं कम व्यय पर पाठकों तक पहुँचनी चाहिए। किन्तु प्रस्तावित बजट में संचार मंत्रालय की संवेदनहीनता साफ प्रगट होती है। संचार मंत्री माननीय प्रमोद महाजन हैं, प्रमोद तो आनंददाता है प्रमुदित करता है किन्तु वे महाजन भी हैं जिसने उनके महाजनी स्वरूप को प्रगट कर दिया है। उनसे अनुरोध है कि वे देश के समक्ष अपने प्रमोदक स्वरूप को ही स्थापित रहने दें।

केन्द्रीय तथा प्रदेशीय सरकार प्रतिवर्ष अरबों रुपये साक्षरता, पठनीयता और पुस्तक विकास पर खर्च करती है। भारत सरकार द्वारा स्थापित नेशनल बुक ट्रस्ट, साहित्य अकादमी तथा भारतीय भाषाओं के लिए स्थापित केन्द्र पर इसका भारी भार ही नहीं पड़ेगा, इसके कार्य भी प्रभावित होंगे।

संचारमंत्री महोदय से बजट में प्रस्तावित डाक व्यय की दरों के सम्बन्ध में विनम्रतापूर्वक निवेदन है—

	वर्तमान दर	प्रस्तावित दर
लिफाफा	4.00 प्रति 20 ग्राम	5.00 प्रति 20 ग्राम
बुकपोस्ट	3.00 प्रति 50 ग्राम	4.00 प्रति 50 ग्राम
बुक पैकेट (मुद्रित पुस्तकें)	1.00 प्रति 100 ग्राम	8.00 प्रति 100 ग्राम

मार्च 2000 तक लिफाफा 3.00 का था 2001 में बढ़कर 4.00 हुआ और अब 5.00 प्रस्तावित है। क्या प्रतिवर्ष इसमें 1.00 की वृद्धि की जायगी यह विचारणीय है।

बुकपोस्ट मार्च 2000 तक 2.00 तथा 2001 में बढ़कर 3.00 हुआ और अब 4.00 क्या इसमें इसी गति से प्रतिवर्ष वृद्धि होनी है। प्रकाशक अपने हजारों पाठकों को अपने प्रकाशनों की जानकारी बुकपोस्ट द्वारा ही कराता है। एक प्रकाशक वर्ष में औसतन 25 से 50 हजार सूचीपत्र भेजता है, इससे उसके व्यय में कितनी वृद्धि होगी। अब उसे बाध्य होकर पाठकों को नये प्रकाशनों की जानकारी पहुँचाने में कटौती करनी होगी।

बुक पैकेट की दर मार्च 2000 तक 5 रुपये के०जी० (यानी 1000 ग्राम) थी जो गतवर्ष बढ़कर 10 रुपये हो गई और अब अठगुनी यानी 80 रुपये किलो। इस प्रकार की वृद्धि देश के बौद्धिक समाज और सम्पदा को बुरी तरह प्रभावित करेगी।

माननीय संचारमंत्री तथा वित्तमंत्री महोदय से निवेदन है कि पुस्तक, लेखक, प्रकाशन, पाठक तथा बौद्धिक जगत को दृष्टिगत रखते हुए डाकवृद्धि के प्रस्तावों पर निम्नांकित सन्दर्भ में पुनर्विचार करें—

1. लिफाफे को चार रुपये का ही रहने दें इसमें कोई वृद्धि न की जाय।
2. बुकपोस्ट प्रति 100 ग्राम दो रुपये अतिरिक्त 100 ग्राम तीन रुपये किया जाय, ताकि ग्राहकों को अधिकाधिक पुस्तकों की जानकारी प्राप्त हो सके। यह प्रतिकिलो लगभग 30 रुपये हो जाता है।
3. बुक पैकेट (मुद्रित पुस्तकें) प्रति 100 ग्राम 60 पैसे यानी 6 रुपये किलो किया जाय। इससे सुदूर गाँवों तथा कस्बों तक ज्ञान की माध्यम पुस्तकें पहुँच सकेंगी। उल्लेखनीय है कि गाँव-गाँव को दूरसंचार साधनों से जोड़ने का प्रयास हो रहा है, ऐसे में शिक्षा और ज्ञानवर्धिनी पुस्तकों को उनसे क्यों दूर किया जाय?
4. 50 रुपये तक की वी०पी०पी० भेजने पर 2.50 रजिस्ट्रेशन शुल्क लगता है, यह शुल्क 700 रुपये के वी०पी०पी० पैकेटों पर लगने की स्वीकृति दी जाय। आज 50 रुपये मूल्य में कोई उल्लेखनीय पुस्तक नहीं आती।

आशा है प्रबुद्ध मंत्री माननीय प्रमोद महाजन तथा वित्तमंत्री माननीय यशवंत सिन्हा गम्भीरतापूर्वक विचार कर जनमानस को प्रमुदित और यशस्वी करेंगे।

—पुरुषोत्तमदास मोदी

हिन्दी विश्व

हंगरी में हिन्दी सम्मेलन

विश्व स्तर पर हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन एवं कार्यशाला का हंगरी की राजधानी बुडापेस्ट में आयोजित हुआ। तीन दिन तक चले इस सम्मेलन में भारत के अलावा हंगरी, उक्रेन, क्रोएशिया, रोमानिया, पोलैंड, बुलगारिया और चेक गणराज्य के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत का प्रतिनिधित्व सांसद राजनाथ सिंह 'सूर्य', विदेश मंत्रालय में संयुक्त सचिव श्रीमती लता तथा उपसचिव श्री एस०के० श्रीवास्तव ने किया।

बनने चली विश्व भाषा जो अपने घर पर दासी,
सिंहासन पर अँग्रेजी है, देखकर दुनिया हँसी।
— अटलबिहारी वाजपेयी

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के निदेशक प्रो० नित्यानंद

प्रो० नित्यानंद पांडे को मानव संसाधन मंत्रालय की स्वीकृति पर आगरा स्थित केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के निदेशक पद पर नियुक्त किया गया है। प्रो० पांडे सिल्चर विश्वविद्यालय में मानवीय संकाय के डीन तथा शिक्षा विभाग के अध्यक्ष हैं।

डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित भारतीय भाषा न्यास की स्थापना

17 फरवरी 2002 को पूना विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के सेवानिवृत्त आचार्य तथा अध्यक्ष तथा वर्तमान में एमेरिट्स प्रोफेसर 'डॉ० आनंदप्रकाश दीक्षित भारतीय भाषा न्यास' की स्थापना की गयी। सलाहकार न्यासी पुणे के उद्योगपति श्री सदानंद महाजन ने न्यास के उद्देश्यों की घोषणा की—(1) भारतीय भाषाओं के अध्यापन के लिए केन्द्र स्थापित या संगठित करना अथवा ऐसे केन्द्रों की मदद करना, (2) हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के योग्य विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करना, (3) शोध के लिए शिक्षावृत्ति प्रदान करना, (4) भारतीय भाषाओं व साहित्य पर व्याख्यान एवं संगोष्ठियाँ आयोजित करना या उनकी मदद करना, (5) हिन्दी की साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित करना तथा न्यास के लक्ष्यों के अनुरूप चुनी हुई कृतियों की प्रकाशन-व्यवस्था करना, (6) भारतीय भाषाओं व साहित्य का पुस्तकालय स्थापित करना, (7) शोध-संस्थान स्थापित करना, (8) वित्तीय सहायता देकर अन्य भारतीय भाषाओं से हिन्दी में तथा हिन्दी से अन्य भाषाओं में अनुवाद को तथा तुलनात्मक अध्ययन एवं पाठ-सम्पादन को संवर्द्धित करना और (9) अन्य सहायक गतिविधियाँ चलाना।

राष्ट्रीय भाषा आयोग

भारत सरकार को भारतीय भाषा प्रोन्नयन परिषद के साथ ही (अथवा उसके स्थान पर) एक राष्ट्रीय भाषा आयोग का गठन करना चाहिए। यह आयोग उसी प्रकार और स्तर का ही जैसे राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग, पिछड़ा वर्ग आयोग, अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग अथवा मानवाधिकार आयोग हैं। इस आयोग का दायित्व और कार्यक्षेत्र यह हो सकता है—

1. सभी भारतीय भाषाओं का विकास, प्रचार-प्रसार और प्रोन्नयन के लिए योजनाएँ बनाना और उनके कार्यान्वयन के लिए केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों से सम्पर्क करना और सलाह देना।

2. सभी भारतीय भाषाओं में आपसी संवाद, आदान-प्रदान और अनुवाद कार्य को प्रोत्साहित करना, उसके लिए योजनाएँ बनाना और उनके कार्यान्वयन के लिए साहित्य अकादमी, नेशनल बुक ट्रस्ट तथा राज्यों की भाषा और साहित्य अकादमियों से सम्पर्क करना और सलाह देना।

3. भारतीय भाषाओं के लेखकों/भाषाविदों/रंगकर्मियों के मिले-जुले सम्मेलन करना, जिनमें सभी लोग आपस में विचार-विमर्श कर सकें, नई प्रवृत्तियों और रचनाओं से परिचित हो सकें।

4. एक भाषा के लेखकों को दूसरी भाषा के क्षेत्र में भेजना, जिससे वे उस भाषा और उसके साहित्य का अंतरंग परिचय प्राप्त कर सकें और क्षेत्रीय संस्कृति की विशेषताओं से अपना तादात्म्य स्थापित कर सकें।

5. भारतीय भाषाओं के मिले-जुले विश्व सम्मेलन आयोजित करना और उनमें विदेशों में बसने वाले विभिन्न भारतीय भाषा-भाषियों की सक्रिय भागीदारी उत्पन्न करना।

6. भारतीय साहित्य के एक समग्र और समन्वित स्वरूप के विकास की दिशा में ठोस कदम उठाना।

7. भारतीय भाषाओं के बहुख्यात साहित्यकारों की जयंतियाँ अखिल भारतीय स्तर पर आयोजित करना।

8. एक से अधिक भारतीय भाषाओं में सिद्धता प्राप्त करके एक भाषा से दूसरी भाषा में सीधा अनुवाद कर सकने की क्रिया को प्रोत्साहित करना।

9. विश्वविद्यालयों में भारतीय साहित्य के समग्र और समन्वित पाठ्यक्रम तैयार करवाना और उन्हें स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करना। सम्भव हो तो इस कार्य के लिए एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना करना।

10. सबसे महत्वपूर्ण बात है सभी भारतीय भाषाओं के मध्य विचार चर्चा तथा पत्र-व्यवहार के लिए हिन्दी को सम्पर्क और सम्बन्ध-भाषा के रूप में आगे बढ़ाना। **— महीप सिंह**

कथ्य-अकथ्य

संस्कृत काव्यशास्त्र का आरम्भ सातवीं-आठवीं सदी में तब हुआ जब लगभग सभी महान लेखक हो चुके थे और स्वर्णयुग समाप्त हो रहा था जिसे बनाये रखने के लिए काव्यशास्त्र का विकास हुआ। पश्चिम आज हमें यह बता कर कि उस काव्यशास्त्र को रिवाइव किया जाय यह समझा रहा है कि हम काव्य छोड़कर 'थियरी' में ध्यान लगायें। हमें याद रखना चाहिए कि थियरी के लिए साहित्य एक 'इलेस्ट्रेशन' है जो आलोचना को संकीर्ण और अमानुषिक बनाती है। आनन्दवर्धन को पढ़ने से पता नहीं चल सकता कि कालिदास कितने बड़े कवि थे।

'थियरी' से दूसरा खतरा यह है कि यह साहित्य को अमानवीय बनाती है। कविता, कहानी या उपन्यास एक जानदार चीज है जिसका पाठक पढ़ते हुए वैसे ही स्पर्श करता है जैसे हम जीवित प्राणियों को करते हैं। थियरी पाठक को भी अमानुषिक बनाती है।

— डॉ० नामवर सिंह

★ ★ ★

दिल्ली में लेखकों को यश और प्रतिष्ठा तो मिल जाती है, पर उनकी रचनाएँ अपनी चमक खो देती हैं। दिल्ली के लेखक सिर्फ गुटबाजी और तिकड़म के जरिये ही हिन्दी साहित्य में बने रहते हैं। हिन्दी साहित्य पर दिल्ली हावी है इसलिए दिल्ली के बाहर के लेखकों की चर्चा नहीं होती या कम होती है।

— कुमार पंकज

★ ★ ★

दिल्ली में रह कर एक-दो किताबें लिखने वाला जनसम्पर्क के द्वारा कालजयी और विश्वविख्यात हो जाता है। साहित्येतर परिश्रमों और कम प्रतिभा के सहारे आप दिल्ली में बैठकर जो प्रतिष्ठा और हैसियत प्राप्त करते हैं वह आपकी रचनात्मकता को खा जाती है।

दिल्ली जैसी जगह में हमारी चुनौतियाँ लगभग वैश्विक हैं। हमें देश भर की प्रतिभा के सामने प्रतिष्ठित करना जरूरी भी हो जाता है। गहन अध्ययन चाहे हम लोग न करें कोपल, पत्ते तोड़कर इतनी बौद्धिक जानकारी जमा कर लेते हैं कि जिम्मेदार और प्रतिभाशाली होने का अपना मुखौटा साफ कर सकें। यहाँ के सेमिनारों और अन्य कार्यक्रमों के लिए जिस तरह मंत्री, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री सुलभ हो जाते हैं और पत्रकारों की टोलियाँ उनके पीछे लग जाती हैं वैसा सौभाग्य कस्बे में पड़े बड़े से बड़े लेखक को सुलभ कहाँ है।

यहाँ सम्पर्क सुख सुविधा सभी की दुनिया खुली है। इस शहर में इस स्वर्ग में इन्द्र और साहित्य कला के क्षेत्र में स्वर्गीय होने का आश्वासन आपकी राह देख रहे हैं।

— राजेन्द्र यादव

★ ★ ★

दिल्ली की साहित्यिक दुनिया ऐसी नहीं है कि यहाँ की रचनाओं को पहचान देती है बल्कि बाहर की अच्छी रचनाओं को यहाँ महत्त्व भी दिया जाता है और उसकी चर्चा भी होती है।

दिल्ली में राष्ट्रीय अखबार, टी०वी० का केन्द्र होने के कारण यहाँ की चर्चा कुछ ज्यादा ही हो जाती है। प्रकाशन उद्योग भी यहीं है इसलिए भी चर्चा हो जाती है। जगह किसी व्यक्ति को महान नहीं बनाता, बल्कि रचना महान बनाती है। किताब बोलती है व्यक्ति नहीं बोलता।

— मैत्रेयी पुष्पा

★ ★ ★

साहित्य के प्रति जो उत्तेजना, अपनापन भोपाल, जयपुर, इलाहाबाद, पटना, लखनऊ, कोलकाता में है वह दिल्ली में मयस्सर नहीं है। दिल्ली में जो कुछ होता है वह औपचारिक है। राजा जहाँ रहता है वहाँ कुछ न कुछ संस्कृति पैदा हो जाती है। बाद में राजाओं के यहाँ पैदा होने वाली संस्कृति का अर्थ राजनीति है।

— अरुण प्रकाश

★ ★ ★

दिल्ली एक अच्छे खासे प्रतिभाशाली लेखक को अवसरवादी और तिकड़मी बना देती है।

— भगवानदास मोरवाल

★ ★ ★

दिल्ली के साहित्यिक राजधानी होने में सामाजिक-सांस्कृतिक कारण नहीं बल्कि राजनीतिक कारण है। जहाँ सत्ता होती है उसी जगह का महत्त्व होता है।

— महेश दर्पण

स्मृति-शेष

—सुप्रसिद्ध समीक्षक **डॉ० प्रेमशंकर** का 17 फरवरी 2002 को लम्बी बीमारी के बाद सागर में निधन हो गया। वे 72 वर्ष के थे।

जन्म सन् 1930 ई० में नैमिष क्षेत्र के एक निम्न-मध्यमवर्गीय ग्रामीण परिवार में। आरम्भिक शिक्षा डॉ० जयदेव सिंह की कृपा से। परवर्ती अध्ययन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से। आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी के निर्देशन में 'प्रसाद का काव्य' विषय पर शोधकार्य।

लखनऊ क्रिश्चियन कालेज और सागर विश्वविद्यालय में अध्यापन। इतिहास, समाजशास्त्र एवं संस्कृति में विशेष रुचि।

लखनऊ से प्रकाशित पत्रिका 'युग चेतना' के सम्पादक मण्डल में। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनात्मक हिस्सेदारी। यूरोप के कुछ विश्वविद्यालयों में व्याख्यान। इटली में विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में अध्यापन।

प्रकाशित पुस्तकें—प्रसाद का काव्य, कामायनी का रचना-संसार, हिन्दी स्वच्छन्दतावादी काव्य, भक्तिचिंतन की भूमिका, भक्तिकाव्य की भूमिका, कृष्णकाव्य और सूर, रामकाव्य और तुलसी, भक्तिकाव्य की सांस्कृतिक चेतना, भक्तिकाव्य का समाजशास्त्र, सृजन और समीक्षाा, आचार्य नन्ददुलारे बाजपेयी, नयी कविता की भूमिका, सियारामशरण गुप्त (आलोचना), पहाड़ी पर बच्चा (कविता), समय और सम्भावना।

—महामना पं० मदनमोहन मालवीय की पुत्रवधू एवं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति गोविन्द मालवीय की पत्नी एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी **श्रीमती ऊषा मालवीय** का 97 वर्ष की अवस्था में 18 फरवरी 2002 को इलाहाबाद में निधन हो गया।

—आकाशवाणी इलाहाबाद के प्रख्यात नाट्य लेखक निर्माता एवं निर्देशक **विनोद रस्तोगी** (मूलनाम विश्वेश्वरप्रसाद रस्तोगी) **बनाम मुंशी इतवारी लाल** का 23 फरवरी 2002 को प्रात: इलाहाबाद में निधन हो गया। वे लगभग 80 वर्ष के थे।

—मैथिली और हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार और पूर्व सांसद **पं० सुरेन्द्र झा** का 5 मार्च की रात बिहार के दरभंगा जिले के राजकुमारगंज में निधन हो गया। वे 93 वर्ष के थे।

पं० सुरेन्द्र झा द्वारा लिखी गयी रचना अर्चना, प्रतिपदा, सावन भादो, उत्तरा और दत्तवती काफी चर्चित रही है।

—पालि, बौद्ध दर्शन व संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान तथा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में श्रमण विद्या संकाय के अध्यक्ष **प्रो० लक्ष्मीनारायण तिवारी** का 10 मार्च को पूर्वाह्न साढ़े 10 बजे आयकर कालोनी, वाराणसी के समीप स्थित उनके आवास पर निधन हो गया। लम्बे समय से अस्वस्थ चल रहे प्रो० तिवारी 73 वर्ष के थे।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से वर्ष 1993 में सेवानिवृत्त होने से पूर्व प्रो० तिवारी ने यहाँ श्रमण विद्या संकाय अध्यक्ष, कुलसचिव, वित्त अधिकारी व पुस्तकालयाध्यक्ष आदि पदों पर काम किया। इसके साथ ही उन्होंने यहाँ कुछ दिनों तक कार्यवाहक कुलपति का कार्यभार भी सँभाला था। अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये प्रो० तिवारी का ग्रन्थ 'कच्चायन व्याकरण' पालि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है। प्रो० तिवारी ने भिक्षु जगदीश कश्यप के साथ त्रिपिटक के कई महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों तथा जातक कथा, कच्चायन व्याकरण, मनिसार मंजूषा टीका, कविराज प्रतिभा व विश्वदृष्टि ग्रन्थों का लेखन व सम्पादन किया।

—महाराष्ट्र में राजनीति, साहित्य और पत्रकारिता के स्तम्भ **डॉ० राममनोहर त्रिपाठी** का 7 मार्च गुरुवार को बाम्बे अस्पताल दोपहर 1 बजे लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। अस्वस्थता की हालत में भी वे अपना नियमित स्तम्भ निरन्तर लिखते रहे। महाराष्ट्र के नगरविकास, सूचना, जनसंपर्क, राज-शिष्टाचार आदि विभागों के राज्यमंत्री रह चुके श्री त्रिपाठी मुम्बई तथा राज्य कांग्रेस के अनेक पदों पर कार्यरत रह चुके थे। श्री त्रिपाठी का जन्म 12 जनवरी 1932 को रायबरेली के मिसिर खेड़ा गाँव में हुआ था। श्री त्रिपाठी 12 वर्ष तक महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष रह चुके हैं। उनके निधन से महाराष्ट्र में उत्तर भारत का एक सशक्त व्यक्तित्व लुप्त हो गया।

पुरस्कार-सम्मान

बिड़ला फाउण्डेशन पुरस्कार

डॉ० रमेशचन्द्र शाह को व्यास सम्मान

11वाँ व्यास सम्मान सुप्रसिद्ध समीक्षक **डॉ० रमेशचन्द्र शाह** को उनकी 1998 में प्रकाशित कृति 'आलोचना का पक्ष' पर दिया जायगा। इस पुरस्कार की राशि ढाई लाख रुपये है।

डॉ० गजानन बालकृष्ण पल्सुले को उनके संस्कृत महाकाव्य 'वैनायकम्' के लिए एक लाख रुपये का दसवाँ **वाचस्पति पुरस्कार** दिया जायगा।

'वैनायकम्' वीर सावरकर की भावनाओं, इच्छाओं और कामनाओं को प्रतिबिंबित करता है। 'वैनायकम्' संस्कृत काव्य के उत्तम स्वरूप को प्रस्तुत करता है जिसमें इसका विषय तो उभरा ही है इसका काव्यतत्त्व और इसकी कलात्मकता भी छुपी नहीं रहती।

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा को उनकी कृति 'वाग्द्वार' (विश्वविद्यालय, प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित) को एक लाख रुपये का **बिहारी पुरस्कार** दिया जायगा। बिहारी पुरस्कार राजस्थान के हिन्दी लेखक के लिए दिया जाता है। वर्ष 2001 का बिहारी पुरस्कार पाने वाले प्रो० कल्याणमल लोढ़ा कलकत्ता विश्वविद्यालय के आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग व जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति रहे हैं।

'वाग्द्वार' आठ हिन्दी कवियों का मौलिक अध्ययन है।

डा० राममूर्ति त्रिपाठी को उनकी रचना 'श्री गुरु महिमा' पर डेढ़ लाख रुपये का **शंकर पुरस्कार** दिया जायगा।

भीष्म, फूकन, कैफी को साहित्य अकादमी का सर्वोच्च सम्मान

हिन्दी के उपन्यासकार भीष्म साहनी, उर्दू के शायर कैफी आजमी और असमी कवि नीलमणि फूकन को साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान के कारण साहित्य अकादमी ने 'रत्न सदस्यता' के लिए चुना। यह साहित्य अकादमी का सर्वोच्च सम्मान है और एक समय में अधिक से अधिक 21 सदस्य हो सकते हैं। ये स्थान श्री आर०के० नारायण, डॉ० रामविलास शर्मा और श्री आर०एन० दांडेकर के निधन से रिक्त हुए हैं।

देवीशंकर अवस्थी सम्मान

हिन्दी आलोचना के लिए **श्री वीरेन्द्र यादव** को वर्ष 2001 का देवीशंकर अवस्थी पुरस्कार दिया जायगा। यह पुरस्कार 'तद्भव' पत्रिका के अप्रैल 2001 अंक में प्रकाशित उनके आलेख 'विभाजन, इस्लामी राष्ट्रवाद और भारतीय मुसलमान' पर दिया जा रहा है। यह पुरस्कार श्री यादव को पाँच अप्रैल की शाम नयी दिल्ली स्थित साहित्य अकादमी सभागार आयोजित समारोह में दिया जा रहा है।

जगद्गुरु विश्वाराध्य विश्वभारती पुरस्कार

पद्मश्री प्रो० वी० वेंकटाचलम् को वर्ष 2002 का जगद्गुरु विश्वाराध्य विश्वभारती पुरस्कार प्रदान किया जायगा। जंगमबाड़ी मठ के पीठाधीश्वर श्री जगद्गुरु डॉ० चन्द्रशेखर शिवाचार्य महास्वामी ने यह घोषणा की। इसके अन्तर्गत 25 हजार की राशि भी प्रदान की जायगी।

हिन्दी में योगदान के लिए डॉ० विवेकी राय सहित 15 सम्मानित होंगे

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान (आगरा) ने हिन्दी सेवी सम्मान योजना के अन्तर्गत वर्ष 2001 के लिए गोविंद मिश्र, डॉ० कमलकिशोर गोयनका, डॉ० विवेकी राय और नरेश भारतीय सहित 15 विद्वानों को हिन्दी में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित करने की घोषणा की है। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा की एक विज्ञप्ति के अनुसार हिन्दी सेवी विद्वानों को सम्मान स्वरूप एक लाख रुपये नकद, एक ताम्रपत्र एवं शाल प्रदान किया जायेगा। संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी सेवी सम्मान योजना के अन्तर्गत हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार एवं प्रशिक्षण हिन्दी पत्रकारिता वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य खोज तथा विदेशों में हिन्दी में उल्लेखनीय कार्य आदि के लिए विद्वानों को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जाता है।

लोकार्पण

तंत्र विद्या के विद्वान् **पं० ब्रजबल्लभ द्विवेदी** लिखित एवं सम्पादित तीन ग्रन्थों— 'पंचवंशतिलीलाशतकम्', 'पंचवर्णमहासूत्रभाष्यम्' और 'भारतीय संस्कृति का समग्र स्वरूप' का लोकार्पण (शिवार्पण) डॉ० चन्द्रशेखर शिवाचार्य महास्वामीजी ने जंगमबाड़ी, वाराणसी स्थित मठ में 11 मार्च 2001 को किया।

❑ ❑ ❑

सुप्रसिद्ध कहानी लेखिका **श्रीमती नीरजा माधव** की काव्यकृति 'प्रस्थानत्रयी' का लोकार्पण पद्मभूषण डॉ० विद्यानिवास मिश्र ने 17 मार्च को सारनाथ में किया। इस अवसर पर डॉ० मिश्र ने कहा—साहित्य की आवाज शोर में दबी हुई है। कविता पाखण्ड के बारे में बोलना भी अरण्यरोदन बनकर रह जाना ही है। कविता कुछ क्षणों तक मन बहलाव है या पलायनवाद या जिन्दगी जिसमें कुछ भी सहज नहीं है। जहाँ कविता में असहज उपाय स्थापित होने के लिए हो रहे हैं, वहाँ नीरजा माधव की कविताएँ असहज नहीं लगतीं। शब्द आकाशयुग कहे जाते हैं जो इनसे प्रेरित होकर रचना करता है, वह कभी मरता नहीं है क्योंकि उसकी रचनाएँ ध्वनियों में, लहरों में और पोथियों में टँगी रहती हैं। अध्यक्ष पद पर आसीन डॉ० बच्चन सिंह ने कहा—डॉ० नीरजा माधव की कविताओं की भाषा में सपाट बयानी कम खुरदरापन ज्यादा होने के कारण एक जीवटपन का दर्शन होता है। मिथकों का प्रयोग उनकी कविता का वैशिष्ट्य है।

पाठकों के पत्र

विगत 50 वर्षों से हिन्दी की सेवा में रहते हुए हिन्दी में साहित्यिक-समाचारों की इतनी सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, सुसम्पादित, सुमुद्रित संक्षिप्त पत्रिका कभी नहीं देखी। — **डॉ० बजरंग वर्मा,** पटना

पत्रिका का स्वरूप बहुत ही सुन्दर है। हिन्दी साहित्य जगत् की वर्तमान जानकारी प्राप्त होती है।

महामना की गरिमा की रक्षा करें। सम्पादकीय चिंतनीय है। क्या यही हमारी प्रगत विचार प्रणाली है? हम किस दिशा में जा रहे हैं? इससे इतना ही अनुभव होता है कि हमारी शिक्षा प्रणाली में कुछ कमी है। सोचना आवश्यक है। आपने जो विचार रखे, वे चिंतनीय है — **डॉ० श्रीराम जी० देशपाण्डे,** नासिक

विश्वविद्यालय प्रकाशन

चौक, वाराणसी

में निम्नलिखित पत्रिकाएँ नियमित रूप से उपलब्ध हैं

1. आलोचना (त्रैमासिक)
2. बहुवचन (त्रैमासिक)
3. सहित
4. वागर्थ (मासिक)
5. वर्तमान साहित्य (मासिक)
6. पहल (त्रैमासिक)
7. कसौटी (त्रैमासिक)
8. परिचय (अर्द्धवार्षिक)
9. कथाक्रम (त्रैमासिक)
10. समकालीन भोजपुरी साहित्य (त्रैमासिक)
11. रंग प्रसंग (अर्द्धवार्षिक)
12. तद्भव (त्रैमासिक)
13. कथन (त्रैमासिक)
14. साहित्य जगत (मासिक)

पुस्तक समीक्षा

अपसंस्कृति के विरुद्ध

पंचायतीराज व्यवस्था ने गाँवों में राजनीतिक चेतना जागृत की है। इससे विकास और राजनीति चेतना की दिशा बदल गयी है। इस दिशा परिवर्तन से बुद्धिजीवी वर्ग और समाज वैज्ञानिकों में चिन्ता व्याप्त हो गयी है। पश्चिम से आयातित उपभोक्ता संस्कृति ने मनुष्य को भी एक उत्पाद बना दिया है। इन्हीं सब से प्रेरित होकर ही शायद यह उपन्यास लिखा गया है। जैसा कि प्रकाशकीय भूमिका में कहा गया है कि लेखक साहित्य और पत्रकारिता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। ऐसे में एक साहित्यिक पत्रकार का मन इस अपसंस्कृति के विरुद्ध कुछ व्यक्त करने को व्यग्र हुआ होगा और उसी की परिणति है यह लघु उपन्यास 'ननकी'।

कथानक की दृष्टि से यह उपन्यास गाँव के एक गरीब परिवार की कहानी पर केन्द्रित है। कहानी मानवीय सम्बन्धों के विभिन्न पक्षों को सजीवता से चित्रित करती है। साधारणतया पुत्री पिता को और पुत्र माता को अपेक्षाकृत अधिक प्रिय होते हैं। मानवीय सम्बन्ध के इस पक्ष को कहानी में बड़ी कुशलता से दर्शाया गया है। गाँवों में बढ़ रही असहिष्णुता, लुप्त हो रही सामूहिकता की भावना, बढ़ता पर्यावरण असन्तुलन, भूमि का हड़पना और मत्स्य न्याय की प्रबलता की चर्चा बड़ी कुशलता और रोचकता के साथ इस उपन्यास में की गई है। भाषा और शैली की दृष्टि से इस उपन्यास की भाषा भी ग्रामीण ही है। ग्रामीण परिवेश को प्रदर्शित करने के उत्साह में लेखक ने कहीं-कहीं भाषा तथा शब्दों की मर्यादा का उल्लंघन भी किया है किन्तु कथानक के सतत् प्रवाह ने अमर्यादित शब्दों को भी मर्यादित आवरण दे दिया है। उपन्यास की नायिका 'ननकी' नाम की ग्रामीण कन्या है जिसके इर्द-गिर्द पूरी कहानी घूमती है। उपन्यास ग्रामीण परिवेश पर आधारित है इसलिए इसके पात्रों के नाम भी उसी प्रकार के हैं। उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रभाव के कारण सामान्य ग्रामीणजन में बढ़ रही धन लिप्सा को भी बखूबी दिखाया गया है। दुखान्त कहानी पर आधारित यह उपन्यास ग्रामीण समाज में तेजी से हो रहे परिवर्तनों को परिलक्षित करने में सफल है।

भाषागत मर्यादा के उल्लंघन के बावजूद इस उपन्यास में आज के बदलते ग्रामीण परिवेश का अतीत, वर्तमान और भविष्य तीनों का चित्रण लेखक ने खूबसूरती से किया है। विषय के अनुरूप भाषा का प्रयोग किया गया है। इसमें ग्रामीण परिवेश की ही भाषा तथा ग्रामीण मुहावरों और लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया गया है। 'हिन्दुस्तान' में **डॉ० मुक्तिनाथ झा**

ननकी
लेखक : बच्चन सिंह
प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, चौक, वाराणसी
मूल्य : 60 रुपये

'संवेद' का मैनेजर पाण्डेय विशेषांक

आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास में अनियतकालिक पत्रों के प्रकाशन की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इन पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी साहित्य की पर्याप्त सामग्री पाठकों को सहज ढंग से सुलभ हो जाती है, साथ ही संग्रह योग्य भी होती है। ऐसी एक पत्रिका है 'संवेद' जिसका जमालपुर शहर से प्रकाशन होता है। यह पत्रिका अनियतकालिक है। प्रस्तुत उसका 11वाँ अंक फरवरी 2002 का है। यह अंक हिन्दी ख्यातिलब्ध समीक्षक डॉ० मैनेजर पाण्डेय के ऊपर पूरा विशेषांक प्रस्तुत है।

डॉ० मैनेजर पाण्डेय जे०एन०यू० में हिन्दी भाषा विभाग के प्रोफेसर और आधुनिक आलोचना के क्षेत्र के जाने-माने हस्ताक्षर हैं। इस पत्रिका में उनके जीवन और साहित्य पर गम्भीरतापूर्वक प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इस अंक में हिन्दी के प्रख्यात से कम-प्रख्यात 21 लेखकों की रचनाएँ प्रकाशित की गयीं हैं जो पाण्डेयजी की आलोचना और आलोचना शैली पर प्रकाश डालती हैं।

इन दिनों साहित्य का इतिहास दर्शन, साहित्य का समाजशास्त्रीय मूल्य उत्तर आधुनिकता जैसे प्रमुख मुद्दों पर साहित्य में चर्चा होती है। इन विषयों पर विचार करते हुए पाण्डेयजी के योगदान का मूल्यांकन किया है।

इस पत्रिका के सभी लेख पठनीय हैं। साथ ही लौहटी से दिल्ली तक (यानि गाँव से दिल्ली तक की लोकयात्रा) का इण्टरव्यू के माध्यम से प्रस्तुत सामग्री अधिक महत्त्वपूर्ण है। इस इण्टरव्यू में पाण्डेयजी के जीवन और साहित्य दोनों पक्ष खुलकर सामने आये हैं। इससे उनके साहित्य और आलोचना को समझने में मदद मिलेगी। उनके विचारों और उनकी लोकयात्रा को समझने में सुविधा होगी। इस इण्टरव्यू में ये सभी पक्ष पूरी तरह उजागर हुए हैं। आलोचक मैनेजर पाण्डेय के अवदानों को समझने के लिये 'संवेद' का यह अंक अपने आप में परिपूर्ण है। **—डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह**

संवेद
फरवरी 2002, अंक-11
अमोला कालोनी, गाँधी मार्ग, जमालपुर, मुंगेर
बिहार
मूल्य : 20 रुपये

भारतीय वाङ्मय (मासिक)

(फार्म नं० 4, नियम 8 के अनुसार स्वामित्व सम्बन्धी विवरण)

समाचार पत्र का नाम : भारतीय वाङ्मय
प्रकाशन अवधि : मासिक
भाषा जिसमें प्रकाशित होती है : हिन्दी
प्रकाशन स्थान : विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी
सम्पादक का नाम : पुरुषोत्तमदास मोदी
नागरिकता व पता : भारतीय, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी
प्रकाशक का नाम : अनुरागकुमार मोदी
नागरिकता व पता : भारतीय, विशालाक्षी भवन, चौक, वाराणसी
मुद्रक का नाम व पता : वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि० चौक, वाराणसी

उन व्यक्तियों के नाम व पता जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों :

पुरुषोत्तमदास मोदी
अनुरागकुमार मोदी
परागकुमार मोदी

मैं अनुरागकुमार मोदी एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी के अनुसार दिए गए विवरण सत्य हैं।

वाराणसी, **अनुरागकुमार मोदी**
28 फरवरी 2002

अक्षर बीज की हरियाली

वेदप्रकाश 'अमिताभ'

180.00

अपनी जमीन से जुड़ी हुई रचना-संवेदना, ग्रामजीवन के प्रति अकृत्रिम लगाव और गाँव के प्रति चिंता की आत्मीय किन्तु सर्जनात्मक अभिव्यक्ति— डॉ० विवेकी राय के लेखन के प्रमुख आकर्ष-बिन्दु हैं। प्रस्तुत समीक्षा कृति में विवेकी राय के समग्र लेखन की शक्ति और सीमाओं की पहचान बहुत गहराई से की गई है। सतही निष्कर्षों और चालू कथनों से बचते हुए 'रचनाकार' के समग्र रचना-व्यक्तित्व को जानने-बूझने का एक सार्थक प्रयास है।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

नयी पुस्तकें

उपन्यास

युगन्धर (श्रीकृष्ण)	शिवाजी सामन्त	500
खुले पैरों की बेड़ियाँ	ज्ञान सिंह मान	300
समरांगण	मेहरुन्निशा परवेज़	350
भूमिपुत्र	नज़रुल इसलाम	450
अभियान	निलय उपाध्याय	250
प्रतिघात	नागनाथ इनामदार	250
छिन्नमस्ता	इन्दिरा गोस्वामी	125
निष्कासन	दूधनाथ सिंह	150
कस्तूरी कुण्डल बसे	मैत्रेयी पुष्पा	250
सलाम आख़िरी	मधु कांकरिया	150
सातवीं पुश्त	सोमलता जैन	125
काशी का अस्सी	काशीनाथ सिंह	195
जेन आयर	शार्लोट ब्रान्टे (अनु. विद्या सिन्हा)	495
बिढार	भालचन्द्र नेमाड़े	295
शक्कर	कु. चिन्नप्प भारती	195
पवलाई	कु. चिन्नप्प भारती	125
काबुलीवाले की बंगाली बीबी	सुष्मिता बंद्योपाध्याय	150
पराजय	अ. फादेयेव	195
पहली उमंगें	कोंस्तांतीन फ़ेदिन	395
विजेता	शराफ रशीदोव	–
जंगल	अप्टन सिंक्लेयर (अनु. सत्यम)	295
रामो का भतीजा	देनी दिदेरो	125
पांचजन्य	गजेन्द्रकुमार मित्र	395
हस्तिनापुर का शूद्र महामात्य	युगेश्वर	140
चरित्रहीन	आबिद सुरती	180
रागविराग	श्रीलाल शुक्ल	100
कैदी	शान्ताकुमार	120
चरित्रहीन	आबिद सुरती	180
लगता नहीं है दिल मेरा	कृष्णा अग्निहोत्री	250

कहानी

आइ क्यू की सच्ची कहानी	लूशुन	25
कालजयी कहानियाँ	सआदत हसन मंटो	25
कालजयी कहानियाँ	तालस्ताय	25
उसने कहा था	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी	25
कालजयी कहानियाँ	होर्खे लुइस बौर्खेस	25
कालजयी कहानियाँ	प्रेमचंद	25
कालजयी कहानियाँ	वैक्कम मोहम्मद बशीर	25
कालजयी कहानियाँ	नादीन गोदीमैर	25
कालजयी कहानियाँ	विष्णु सखाराम खांडेकर	25
बिल टेलर की डायरी	लिली रे	125
तपता समन्दर	यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	150
देवी	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	100
जल्लाद	संजीवकुमार 'संजय'	95
आमीन	शैलेन्द्र सागर	125
गोनू झा के किस्से	विभा रानी	150
तुम कहो तो	सीतेश आलोक	110
अक्षरों की रासलीला	अमृता प्रीतम	125
तलहटी	शशिप्रभा शास्त्री	110
ये जीवन है	आशापूर्णा देवी	120
पटाक्षेप	लिली रे	85
आज का समय	सुनील गंगोपाध्याय	100
भविष्यद्रष्टा	ओमा शर्मा	125
सग़ीर और उसकी बस्ती के लोग	हरि भटनागर	100
एक दूसरा अलास्का	अनीता राकेश	195
नाव के बाहर	गौरीनाथ	150
अन्तर्दाह तथा अन्य कहानियाँ	रामनाथ निखरा	95
रफ्तार	दूर्वा सहाय	125
यौवन	विमलकुमार हजारिका	150
यौवन	विमलकुमार हजारिका	125
रफ्तार	दूर्वा सहाय	125
पहला उपदेश	अनिलकुमार सिंह	125
अन्तर्दाह तथा अन्य कहानियाँ	रामनाथ नीखरा	95
एक दूसरा अलास्का	अनीता राकेश	195
पत्थर के नीचे दबे हुए हाथ	राजकमल चौधरी	195
आज़ादी मुबारक	कमलेश्वर	160
औरत एक रात है	मालती जोशी	120
घोड़े की नाल	तरसेम गुजराल	150

कविता, गज़ल एवं शायरी

मिट्टी मिट्टी मेरा दिल	मुगन्न तबस्सुम	95
महाकवि गालिब	सं० शमीम हनफी	100
फ़ैज अहमद फ़ैज़	सं० शमीम हनफी	95
अकबर इलाहाबादी	सं० शमीम हनफी	150
अख़्तरुल ईमान	सं० शमीम हनफी	100
हमारे लोकप्रिय गीतकार : रमानाथ अवस्थी	सं० शेरजंग गर्ग	95
हमारे लोकप्रिय गीतकार : गोपालदास नीरज	"	95
हमारे लोकप्रिय गीतकार : वीरेन्द्र मिश्र	"	95
हमारे लोकप्रिय गीतकार : गिरिजा कुमार माथुर	"	95
हमारे लोकप्रिय गीतकार : दुष्यन्त कुमार	"	95
हमारे लोकप्रिय गीतकार : बालस्वरूप राही	"	95
उड़ान	राजेश रेड्डी	95
इन्तख़ाब	ख़याल	80
कपटपासा	सीताकान्त महापात्र	100
त्रयी	कन्हैयालाल सेठिया	130
इस तरह एक अध्याय	नवल शुक्ल	100
मोती, आँसू और ओस	दिनेशायन	100
नूर	रंजन ज़ैदी	125
जहाँ से जन्म लेते हैं पंख	निरंजन श्रोत्रिय	100
जगत में मेला : अनूप सेठी की कविताएँ	अनूप सेठी	120
रूपिन-सूपिन	प्रमोद कौंसवाल	100
समय की आवाज़	सं० कर्मेन्दु शिशिर	200
हमारे झूठ भी हमारे नहीं	अमिता शर्मा	150
पहला उपदेश	अनिलकुमार सिंह	125
धूप घड़ी	राजेश जोशी	195
अतिक्रमण	कुमार अंबुज	125
छैंया-छैंया	गुलज़ार	125
दुश्चक्र में स्त्रष्टा	वीरेन डंगवाल	125
उर्दू है जिसका नाम	दाग़ देहलवी	375
खानाबदोश चाहतें	अहमद फ़राज़	375
मेरी आवाज़ सुनो	कैफ़ी आज़मी	495
आबनूसी ख्याल	ऐन रशीद खान	95
समुंदर से पहली मुलाक़ात	आफ़ताब हुसैन	140
बदमाश दर्पण (भोजपुरी कविता)	तेग अली	60
रैदास बानी (संकलित रचनाएँ)	डॉ० शुकदेव सिंह	325

आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण

पत्राचार	सं० डॉ० बिन्दु अग्रवाल	180
यादें	पं० सूर्यनारायण व्यास	260
कबाड़खाना	ज्ञानरंजन	225
सतरें और सतरें	अनीता राकेश	195
सच, प्यार और थोड़ी सी शरारत	खुशवन्त सिंह	295
अंतरंग संस्मरणों में जयशंकर 'प्रसाद'	पुरुषोत्तमदास मोदी	150
नदिया से सागर तक	ब्रज गोपालदास अग्रवाल	95
सच, प्यार और थोड़ी सी शरारत	खुशवंत सिंह	395

समीक्षा

भवभूति	अमृता भारती	225
अक्षर बीज की हरियाली	वेदप्रकाश 'अमिताभ'	180
सूफी प्रेमाख्यान काव्य में पौराणिक संदर्भ	डॉ० अनिलकुमार	270
आधुनिक हिन्दी कहानी	डॉ० गंगाप्रसाद विमल	275
हिन्दी साहित्य चिन्तन	सं० सुधाकर पाण्डेय	600
हिन्दी उपन्यास का इतिहास	गोपाल राय	495
हिन्दी आलोचना और भक्ति काव्य	रुस्तम राय	225
नाटककार भारतेन्दु की रंग-परिकल्पना	सत्येन्द्रकुमार तनेजा	125
कविता का शुक्लपक्ष	सं. बच्चन सिंह, अवधेश प्रधान	325

समाज, दर्शन, अध्यात्म, संस्कृति

दर्शन, धर्म-अध्यात्म और संस्कृति	डॉ० देवराज	140
पाश्चात्य दर्शन और सामाजिक अंतर्विरोध	डॉ० रामविलास शर्मा	495
वैदिक धर्म और इस्लाम	डॉ० असहाब अली	250
सामाजिक न्यास	डॉ० वीरेन्द्र सिंह	200
सत्रहवीं शताब्दी में उत्तर भारत का समाज एवं संस्कृति	डॉ० अनीता श्रीवास्तव	300
उत्तर प्रदेश में कारपोरेट नगरों मेंजनसंख्या का स्थानिक प्रतिरूप (1971-91)	गायत्री राय	350
संविधान का सच	कनक तिवारी	300

निबन्ध

हिन्दू होने का धर्म	प्रभाष जोशी	–
हिन्दुत्व और आधुनिकता	सुधीश पचौरी	295

अर्थशास्त्र

औद्योगिक इकाइयों का समाजशास्त्रीय
अध्ययन *डॉ० ओमराज सिंह बिश्नोई*
डॉ० नवनीतकुमार बिश्नोई 300

नाटक, रंगमंच

बिना दीवारों के घर *मन्नू भण्डारी* 95
राजा की रसोई *मोहन महर्षि* 85
अकी *असगर वजाहत* 70
दर्शन-प्रदर्शन *देवेन्द्र राज अंकुर* 195
बिना दीवारों के घर *मन्नू भण्डारी* 125
रुदाली *उषा गांगुली* 95
खड़िया का घेरा *बर्टोल्ट ब्रेष्ट, अनु. कमलेश्वर* 125
दर्शन प्रदर्शन *देवेन्द्रराज अंकुर* 195
नाटककार भारतेन्दु की रंग परिकल्पना
सत्येन्द्र तनेजा 125

राजनीति-इतिहास

निम्नवर्गीय प्रसंग : भाग-2 *शाहिद अमीन* 260
बांग्लादेश से क्यों भाग रहे हैं हिन्दू ?
सलाम आज़ाद 150
न्यायक्षेत्रे : अन्यायक्षेत्रे *अरविन्द जैन* 250
जोहार झारखण्ड *डॉ० अमरकुमार सिंह* 150
निम्नवर्गीय प्रसंग-2 *ज्ञानेन्द्र पाण्डेय, शाहिद अमीन* 295
झारखंड : दिसुम मुक्तिगाथा और
सृजन के सपने *हरिवंश* 495
बांग्लादेश से क्यों भाग रहे हैं हिन्दू ?
सलाम आज़ाद 125
वर्तमान भारत *वेदप्रताप वैदिक* 225
अफगानिस्तान : कल, आज और कल
वेदप्रताप वैदिक 150

पत्रकारिता, सिनेमा

मीडिया और बाज़ारवाद *सं० रामशरण जोशी* 195
भारत—एक अंतहीन यात्रा *राजेन्द्र माथुर* 200
मीडिया और बाज़ारवाद *रामशरण जोशी* 195
मीडिया और बाजार *सुधीश पचौरी* 195
भारतीय सिने सिद्धांत *डॉ० अनुपम सिंह* 295

शिकार

शेरों से मेरी मुलाकातें *शेरजंग* 175

भाषाशास्त्र

सृजन-सैद्धान्तिकी : मार्क्सवाद और
भाषा का दर्शन *वी०एन० वोलोशिनोव* 295
ऐतिहासिक भाषाविज्ञान और
हिन्दी भाषा *डॉ० रामविलास शर्मा* 495
भारतीय भाषाएँ और राष्ट्रीय अस्मिता
डॉ० मुकुन्द द्विवेदी 160
फारसी-हिन्दी शब्दकोश *(दो भाग)*
सैयद बाक़र अब्तही ईसा रिज़ा ज़ादेह, प्र.खं.
डॉ० चन्द्रशेखर 700

विविध

पराजय *अ. फादेयेव* सजिल्द 225; पे.बै. 40
पहली उमंगें *कोंस्तांतीन फ़ेदिन* सजिल्द 495; पे.बै. 75
विजेता *शराफ रशीदोव* सजिल्द 395; पे.बै. 65
न्यायक्षेत्रे : अन्यायक्षेत्रे *अरविन्द जैन* 250
धरोहर : रामो का भतीजा *देनी दिदेरो*
सजिल्द 175; पे.बै. 35
परम्परा : किसान *ओनोरे द बाल्ज़ाक (अनु. सत्यम)*
सजिल्द 395; पे.बै. 65
विरासत : जंगल *अप्टन सिंक्लेयर (अनु. सत्यम)*
सजिल्द 495; पे.बै. 75
अर्द्धांश : स्त्रियों की पराधीनता *जॉन स्टुअर्ट मिल*
(अनु. प्रगति सक्सेना) सजिल्द 195; पे.बै. 50
अज्ञेय संचयिता *सं. राजेन्द्र मिश्र* 195
होईहैं सोइ जो पुरुष रचि राखा *(कानून)*
अरविन्द जैन 295
स्त्रियों की पराधीनता *(स्त्री विमर्श)*
जॉन स्टुअर्ट मिल (अनु. प्रगति सक्सेना) 150
इक्कीसवीं सदी की ओर *(स्त्री विमर्श)*
सं. सुमन कृष्णकांत 295

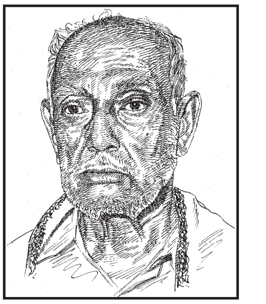

म०म०पं० गोपीनाथ कविराज के ग्रन्थ

मनीषी की लोकयात्रा (म.म.पं. गोपीनाथ
कविराज का जीवन-दर्शन) 300
तांत्रिक वाङ्मय में शाक्त दृष्टि 100
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 1-2) 80
साधुदर्शन एवं सत्प्रसंग (भाग 3) 50
तन्त्राचार्य गोपीनाथ कविराज और
योग-तन्त्र-साधना *रमेशचन्द्र अवस्थी* 50
परातंत्र साधना पथ 40
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा तत्त्वकथा 250
श्री श्री सिद्धिमाता प्रसंग 20
(कायाभेदी ब्रह्मवाणी तथा विवरण सहित)
भारतीय धर्म साधना *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 80
तन्त्र और आगम शास्त्रों का दिग्दर्शन 15
ज्ञानगंज 60
कविराज प्रतिभा 64
दीक्षा 60
श्री साधना 50
स्वसंवेदन 50
प्रज्ञान तथा क्रमपथ 80
तांत्रिक साधना और सिद्धान्त 120
श्रीकृष्ण प्रसंग 250
काशी की सारस्वत साधना 35
शक्ति का जागरण और कुण्डलिनी 100
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-1) 200
भारतीय संस्कृति और साधना (भाग-2) 120
सनातन-साधना की गुप्तधारा 100
अखण्ड महायोग 50
क्रम साधना 60
भारतीय साधना की धारा 30
परमार्थ प्रसंग (प्रथम खण्ड) 150
अखण्ड महायोग का पथ और मृत्यु विज्ञान 20

पं० गोपीनाथ कविराज समकालीन संत-महात्मा

सूर्य विज्ञान प्रणेता योगिराजाधिराज
स्वामी विशुद्धानन्द परमहंसदेव : जीवन और दर्शन
नंदलाल गुप्त 160
English Edition *In Press*
योगिराज विशुद्धानन्द प्रसंग तथा
तत्त्व कथा *म.म.पं. गोपीनाथ कविराज* 250
पुराणपुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण
लाहिड़ी *सत्यचरण लाहिड़ी* 120
नीम करौरी के बाबा *डॉ. बदरीनाथ कपूर* 12
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान *सद्‌गुरुप्रसाद श्रीवास्तव* 150
सोमबारी महाराज (उत्तराखण्ड की
अनन्य विभूति) *हरिश्चन्द्र मिश्र* 50
Purana Purusha Yogiraj Sri Shyama
Charan Lahiree *Dr. Ashok Kr. Chatterjee* 400

तंत्रसिद्ध पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी

पुराण पुरुष योगिराज श्री श्यामाचरण लाहिड़ी
(जीवनी) 120
धर्म और उसका अभिप्राय 80
प्राणमयं जगत *अशोककुमार चट्टोपाध्याय* 22
श्यामाचरण क्रियायोग व अद्वैतवाद 100
आत्मबोध *श्रीभूपेन्द्रनाथ सान्याल* 30
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता (3 खण्डों में) *''* 375
विल्व-दल (द्वितीय खण्ड) *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 25
आश्रम चतुष्टय *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 25
मोक्ष साधन या योगाभ्यास *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 15
दिनचर्या *श्री भूपेन्द्रनाथ सान्याल* 20
आत्मानुसंधान और आत्मानुभूति *''* 20
Purana Purusha Yogiraj Shri Shyama
Charan Lahiree *(Biography)* 400
योग एवं एक गृहस्थ योगी :
योगिराज सत्यचरण लाहिड़ी *शिवनारायण लाल* 150

पं० अरुणकुमार शर्मा के ग्रन्थ

मारणपात्र 250
तिब्बत की वह रहस्यमयी घाटी 180
वह रहस्यमय कापालिक मठ 180
मृतात्माओं से सम्पर्क 200
परलोक विज्ञान 300
कुण्डलिनी शक्ति 250
तीसरा नेत्र (भाग-1) 250
तीसरा नेत्र (भाग-2) 300
मरणोत्तर जीवन का रहस्य (भाग-1) 35

अन्य आध्यात्मिक तथा धार्मिक ग्रन्थ

धर्म क्षेत्रे कर्म क्षेत्रे : श्रीमद्‌भगवद्‌गीता
स्यमन्तक मणि मिश्र 94
सब कुछ और कुछ नहीं *मेहेर बाबा* 60

जपसूत्रम (प्रथम तथा द्वितीय खण्ड)		
	स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती (प्रत्येक)	150
सोमतत्व	*सं. प्रो. कल्याणमल लोढ़ा*	100
वेद व विज्ञान	*स्वामी श्री प्रत्यगात्मानन्द सरस्वती*	80

चिंतक, संत, योगी, महात्मा

उत्तराखण्ड की सन्त परम्परा	*डॉ. गिरिराज शाह*	100
सन्त रैदास	*श्रीमती पद्मावती झुनझुनवाला*	60
योगिराज तैलंग स्वामी	*विश्वनाथ मुखर्जी*	40
ब्रह्मर्षि देवराहा-दर्शन	*डॉ. अर्जुन तिवारी*	50
भारत के महान योगी		
भाग 1-2 (संयुक्त)	*विश्वनाथ मुखर्जी*	100
भाग 3-4 (संयुक्त)	*विश्वनाथ मुखर्जी*	100
भाग 5-6 (संयुक्त)	*विश्वनाथ मुखर्जी*	100
भाग 7-8 (संयुक्त)	*विश्वनाथ मुखर्जी*	100
भाग 9-10 (संयुक्त)	*विश्वनाथ मुखर्जी*	100
भारत की महान साधिकाएँ	*विश्वनाथ मुखर्जी*	40
महाराष्ट्र के संत महात्मा	*ना.वि. सप्रे*	120
शिवस्वरूप बाबा हैड़ाखान	*सद्‌गुरुप्रसाद श्रीवास्तव*	150
दयानन्द जीवन गाथा	*भवानीलाल भारतीय* (यंत्रस्थ)	
आदि शंकराचार्य	*डॉ० जयराम मिश्र*	80
एकता के दूत शंकराचार्य	*डॉ. दशरथ ओझा*	125
गुरुनानक देव : जीवन और दर्शन	*डॉ. जयराम मिश्र*	125
स्वामी रामतीर्थ : जीवन और दर्शन	,,	200
चैतन्य महाप्रभु	*अमृतलाल नागर*	90
भगवान बुद्ध	*धर्मानन्द कोसाम्बी*	160
करुणामूर्ति बुद्ध	*गुणवंत शाह*	25
महामानव महावीर	*गुणवंत शाह*	30
मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन	*डॉ. रघुवंश*	160

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता

गीता रहस्य	*लोकमान्य तिलक*	300
हिन्दी ज्ञानेश्वरी	*संत ज्ञानेश्वर, अनु. ना.वि. सप्रे*	180
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता (3 खण्ड)	*श्यामाचरण लाहिड़ी*	375
गीता प्रवचन	*विनोबा भावे*	20
गीता प्रबन्ध	*श्री अरविन्द*	150
गीता-तत्त्व-बोध (खण्ड 1-2)	*बालकोबा भावे*	300
कृष्ण का जीवन संगीत	*गुणवंत शाह*	300
कृष्ण और मानव सम्बन्ध	*हरीन्द्र दवे*	80
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता	*शांकरभाष्य, नीलकण्ठी*	400
श्रीमद्‌भगवद्‌गीता (2 भाग)	*मधुसूदन टीका, हिन्दी व्याख्या*	1250
यथार्थगीता	*स्वामी अड़गड़ानन्द*	150
भारत सावित्री (3 भाग)	*वासुदेवशरण अग्रवाल*	80

कहकशाँ

हशम तुराबी

50.00

हशम तुराबी का सम्बन्ध बनारस के उस वर्ग और उस परिवेश से है, बानी बुनने की पीड़ा जिसकी घुट्टी में पलती है। उनका सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से कबीर के पेशे से है, और ये वो पेशा है जिसमें खड्डी से लेकर खड तक के मध्य एक सम्पूर्ण मानव अस्तित्व जीवन के समस्त रंगों के साथ परिलक्षित होता है। ज़िन्दगी के इस कटु अथवा सुनहरे अनुभव का माध्यम है ढरकी—ये वही ढरकी है जिससे कबीर ने बानी बुनी भी और बानी कही भी।

हशम ने भी बानी बुनी है लेकिन वे जिस बानी की अभिव्यक्ति करते हैं वो आज की ज़बान में शायरी, जिसके लिये किसी विद्यालय या शिक्षालय का शैक्षणिक प्रमाण-पत्र नहीं, उनके पास विवेक और काव्य रसिज्ञता की दौलत है।

त्रिलोचन ने युक्तिबोध सृजन पीठ का अध्यक्ष पद छोड़ा

हिन्दी के शीर्षस्थ कवि त्रिलोचन शास्त्री ने मुक्तिबोध सृजन पीठ के अध्यक्ष का पद छोड़ दिया है। श्री शास्त्री ने शारीरिक अस्वस्थता के कारण पद छोड़ा है। अब वह अपने पुत्र और पुत्रवधू के साथ हरिद्वार में ही रहेंगे। अध्यक्ष के रूप में श्रीशास्त्री का कार्यकाल गत 31 जनवरी को समाप्त हो गया था। बीमारी की वजह से वे अब इस पद पर बने रहने के इच्छुक भी नहीं थे। संस्कृति विभाग ने उनके निर्धारित मानदेय की राशि का ड्राफ्ट भी हरिद्वार स्थित उनके पुत्र के पते पर भिजवा दिया है। संस्कृति विभाग द्वारा सागर विश्वविद्यालय के सहयोग से यहाँ स्थापित मुक्तिबोध सृजनपीठ के अध्यक्ष के रूप में श्री शास्त्री ने कुछ अर्से तक काम किया।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 3 **अप्रैल 2002** **अंक : 4**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

के लिए

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिन्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी

द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2002

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in